पौराणिक गणेश का स्वरूप

✍ आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

हिन्दुओं के देवों में गणेश जी का नाम बड़ा महत्त्वपूर्ण है। प्रत्येक मंगल कार्य में इनकी पूजा को अनिवार्य व अनिष्टहर्त्ता माना जाता है। बड़ा उदर होने से इन्हें 'लम्बोदर' भी कहा जाता है तथा हाथी का सिर होने से 'गजानन' भी कहते हैं। विडम्बना यह है कि कोई नहीं विचारता कि हमने गणेश जी का क्या रूप बनाया है, जिसे देखकर कोई भी हिन्दूविरोधी व्यंग्य करेगा। हर वैज्ञानिक सोच वाला हँसेगा, परन्तु कथित धर्माचार्य व धर्मभीरु मनुष्य नास्तिक कहकर उसकी निन्दा करेगा, तो कोई इसे सर्जरी का परिणाम बताकर प्राचीन भारतीय विज्ञान पर गर्व करेगा। वास्तविकता को जानने का प्रयास कोई नहीं करेगा।

मैं यहाँ भोले मित्रों को शिव महापुराण, व्याख्याकार- डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, प्रकाशक- चौखम्भा, संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली के आधार पर गणेश जी के जन्म की अति संक्षिप्त कथा लिख रहा हूँ-

इसके द्वितीय रुद्रसंहिता- चतुर्थ कुमारखण्ड के अध्याय 13 से 18 पृष्ठ सं. 627 से 647 तक इसका वर्णन है-

प्रथम कथा- ब्रह्माजी के अनुसार शनि की दृष्टि पड़ने से उनका सिर कटा, फिर उनके धड़ पर हाथी का सिर जोड़ दिया- श्लोक सं. 5

द्वितीय कथा- इसी अध्याय के 20वें श्लोक से कथा का प्रारम्भ है, जिसमें देवी पार्वती ने अपने शरीर से मैल उतार कर एक विशाल आकार के पुरुष

को बनाया, जो अति बलिष्ठ, सुन्दर और पराक्रमी था। उसके हाथ में पार्वती जी ने विशाल लाठी दे दी। जब शिव जी बाहर से आये, तो उस अपरिचित योद्धा को देखकर क्रुद्ध हुए, तब गणेश जी ने शिव जी को लाठी से मारा। तब शिवजी ने अपने गणों से उस अपरिचित योद्धा गणेश को दण्डित करने को कहा। तब गणेश जी ने उन गणों को फटकार कर भगा दिया। शिव जी ने फिर उन्हें डाँटकर गणेश को पीटने को भेजा, परन्तु गणेश ने उन सभी गणों को पीट कर फिर भगा दिया। तब शिव जी ने उन्हें फिर फटकार पुनः गणेश को पीटने के लिए भेजा, पुनः वे डर कर शिव जी के पास आ गये। तब शिवजी ने पुनः युद्ध के लिए भेजा, तब गणेश ने उनको युद्ध में मार-मार कर लहूलुहान कर दिया। वे हजारों गण भाग कर शिव जी के पास पुनः आ गये। इसके बाद शिव जी ने ब्रह्मा जी को अनेक ऋषियों के साथ गणेश को समझाने भेजा, परन्तु ब्रह्माजी के द्वारा विनती करने पर भी गणेश जी परिघ उठाकर ब्रह्माजी को मारने दौड़े तथा उनके दाढ़ी-मूँछों को नोंच लिया। इससे शिवजी अति क्रुद्ध हुए और उन्होंने इन्द्रादि देवताओं, कार्तिकेय आदि गणों, भूत, प्रेत, पिशाचों को अपने-2 अस्त्र-शस्त्र लेकर गणेश के साथ युद्ध करने भेजा। फिर पार्वती जी भी युद्ध में कूद पड़ीं और देवताओं, गणों, भूतों व पिशाचों के सभी अस्त्र-शस्त्रों को काट कर भगा दिया। अन्त में विष्णु जी से मन्त्रणा करके शिव जी देवताओं की सेना के साथ गणेश जी से युद्ध करने आए, परन्तु वे सभी गणेश का सामना नहीं कर सके तथा विष्णु जी के परामर्श से छल से गणेश जी का सिर शिव जी ने काट दिया। इसके पश्चात् पार्वती जी ने शिव जी को गणेश जी का परिचय कराया। तब शिव जी ने एक हाथी का सिर काट कर गणेश जी के धड़ पर जोड़ दिया।

मेरा निवेदन

मेरे हिन्दू भाइयो! क्या इस कथा से आपको कहीं भी अध्यात्म व विज्ञान की गन्ध भी आती है? क्या पार्वती जी के शरीर पर इतना मैल था, जिससे एक विशाल आकार वाले योद्धा का शरीर बन गया? क्या शिव जी को यह भी ज्ञान नहीं हुआ कि वह उनकी पत्नी द्वारा उत्पन्न उन्हीं का पुत्र है, जिसकी उत्पत्ति मैल से हुई? क्या मैल से शरीर बन सकता है? क्या इसमें ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु व स्वयं शिव की दुर्गति नहीं दर्शायी है? क्या हम स्वयं ही अपने देवों का उपहास नहीं कर रहे हैं? क्या वे सभी कायर व दुर्बल थे? क्या इससे इन देवों का अपमान नहीं होता है? क्या भारतीय इतिहास व संस्कृति के विरोधी लोगों को आप इन महापुरुषों के अपमान का स्वयं अवसर नहीं दे रहे हैं? निर्दोष हाथी को मार कर क्या आप शिव जी को अपराधी सिद्ध नहीं कर रहे हैं? जो शिव जी मनुष्य के धड़ पर हाथी का सिर जोड़ सकते हैं, उन्होंने गणेश जी का कटा हुआ सिर क्यों नहीं जोड़ दिया? क्या मनुष्य के धड़ पर हाथी का सिर जोड़ा जा सकता है? यदि जोड़ भी दें, तो हाथी का सिर कैसे मानवीय कार्य करेगा? उसमें मस्तिष्क, स्वर यन्त्र, सभी तो हाथी के होंगे, तब क्या गणेश जी हाथी की भाँति चिंघाड़ते थे? क्या वे हाथी जैसी बुद्धि रखने वाले प्राणी बन गये थे? उन्हें तो बुद्धिमान् व वक्ता माना जाता है, तब यह कैसे सम्भव है?

मेरे मित्रो! जरा विचारो! आज भारतविरोधी शक्तियाँ वैसे ही हमारे इतिहास पर प्रश्न खड़े कर रही हैं, सत्य सनातन वैदिक धर्म का उपहास कर रही हैं, टी.वी. चैनलों पर ऐसे नास्तिकों को शोर मचाते देखकर मैं भी दु:खी होता हूँ, परन्तु जब अपने ही पुराण जैसे कल्पित ग्रन्थ ऐसी कहानियाँ लिखें और घर-2 यही प्रचलन में हो, तब विधर्मियों को दोषी कैसे मानूँ?

अनेक गणेश भक्त मेरे इस लेख पर ही क्रुद्ध होंगे। मेरा निवेदन है कि विवेकपूर्वक प्रत्येक बात की परीक्षा करें। अन्धी आस्था में बहकर धर्म व इतिहास दोनों को नष्ट न करें। इधर मैं महाभारत ग्रन्थ की चर्चा करूँ, तो उसमें कहीं भी गणेश जी का नाम नहीं है, केवल कार्तिकेय को शिव जी का पुत्र बताया गया है। आशा है आप मेरे विचारों को अपने मस्तिष्क की गहराईयों से निष्पक्षता की तराजू में तोलकर सत्य का ग्रहण एवं असत्य का त्याग करने का साहस करेंगे।

गणपति की यथार्थता

हमने शिवपुराण में वर्णित गणेश जी के स्वरूप और इतिहास को प्रस्तुत किया। अब आपके मन में गणेश जी के वास्तविक स्वरूप को जानने की इच्छा होगी। इस विषय में हमारा कथन स्पष्ट है कि आज पौराणिक गणेश को ही सर्वत्र माना और जाना जा रहा है। इस पुराण में वर्णित कथा से कहीं भी आलंकारिक गणेश की सिद्धि नहीं होती है, जो महानुभाव गणेश जी के रूप की आलंकारिक व्याख्या करते हैं, उसका कोई प्रामाणिक आधार नहीं है। क्या कोई शिवपुराण में वर्णित सम्पूर्ण कथा की ऐसी आलंकारिक व्याख्या कर सकता है? फिर शिवपुराण की कथा में गणेश जी के छः हाथ होने का संकेत भी नहीं है, तब क्या कोई चित्रकार जैसा भी चित्र बना दे, उसकी ही हम आलंकारिक व्याख्या करने लग जायेंगे? क्या देवों अथवा ईश्वर का स्वरूप चित्रकार निर्धारित करेंगे? क्या हमें इसके लिए वेद और ऋषियों के ग्रन्थों की कोई आवश्यकता नहीं है? जो महानुभाव धर्म को केवल आस्था और विश्वास की वस्तु मानते हैं, क्या वे इस बात पर चिन्तन करेंगे कि सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं हो सकता और सत्य का निर्धारण कभी आस्था और विश्वासों से नहीं, बल्कि तर्कसंगत तथ्यों और प्रमाणों

के आधार पर होता है। वेद के पश्चात् संसार के सबसे प्राचीन और प्रामाणिक ग्रन्थ मनुस्मृति (प्रक्षिप्त श्लोकों को छोड़कर) में भगवान् मनु ने स्पष्ट कहा है-

> 'यस्तर्केण अनुसंधत्ते स धर्म वेद नेतरः।' (मनुस्मृति)

अर्थात् जो तर्क के साथ अनुसंधान करता है, वही धर्म को जान सकता है, अन्य प्रकार से नहीं। महर्षि यास्क ने निरुक्त शास्त्र में तर्क को ऋषि और ऊहा को ब्रह्म कहा है। इससे स्पष्ट है कि धर्म कभी भी आस्था और विश्वासों के आधार पर नहीं समझा जा सकता। जब से ऋषियों की इस बात को भुलाकर, वेद से सर्वथा अज्ञानी रहकर कल्पित ग्रन्थों एवं वेदविहीन धर्माचार्यों व कथावाचकों की मिथ्या कथाओं को सुनकर आस्था और विश्वासों के आधार पर धर्म का निर्धारण होने लगा, तब से संसार में हजारों कथित धर्म पैदा हो गये और उन परस्पर विरोधी कथित धर्मों ने मानव समाज को खण्ड-2 करके खून की नदियाँ बहाई हैं। यह खेल सैकड़ों वर्षों से अनवरत जारी है। कोई भी अपने कथित धर्म पर वैज्ञानिक दृष्टि से तर्कसंगत विचार करके एक सत्यधर्म की खोज का प्रयास नहीं करता।

गणपति की ऐतिहासिकता

महाभारत में गणेश जी को महर्षि व्यास जी का लेखक अवश्य बताया है, परन्तु उसमें गजानन्द, एकदन्त एवं शिवपुत्र जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं है, न उनका कोई स्पष्ट परिचय है। वे व्यास जी के वचनों को लिखने के लिए आये और लिखने लगे, यह चर्चा दो-तीन श्लोकों में है, परन्तु

महाभारत ग्रन्थ की समाप्ति पर यह कहीं भी संकेत नहीं है कि गणेश जी लेखन कार्य पूर्ण करके वापस चले गये। फिर यहाँ यह भी विचारणीय है कि महर्षि वेदव्यास जी जैसे महापुरुष की शिष्य मण्डली में क्या कोई ऐसा भी योग्य नहीं था कि लेखन कार्य भी कर लेता। इस कारण यह प्रसंग ही प्रक्षिप्त (मिलावट) प्रतीत होता है। उल्लेखनीय है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने सत्यार्थ प्रकाश में राजर्षि भोज द्वारा लिखित 'संजीवनी' नामक ग्रन्थ के हवाले से कहा है-

> 'व्यास जी ने महाभारत में कुल चार हजार चार सौ श्लोक ही लिखे थे। पुनः उनके शिष्यों ने पाँच हजार छः सौ श्लोक मिलाकर दस हजार श्लोकों का 'भारत' नामक ग्रन्थ बनाया। महाराज विक्रमादित्य के समय में बीस हजार श्लोक हो गये। महाराजा भोज कहते हैं कि मेरे पिताजी के समय में पच्चीस और अब मेरी आधी उम्र में तीस हजार श्लोक का महाभारत पुस्तक मिलता है, जो ऐसे ही बढ़ता चला, तो महाभारत का पुस्तक एक ऊँट का बोझा हो जायेगा और ऋषि-मुनियों के नाम से पुराणादि ग्रन्थ बनावेंगे, तो आर्यावर्तीय लोग भ्रमजाल में पड़के वैदिक धर्मविहीन होके भ्रष्ट हो जायेंगे।'

पाठक यह बात सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में स्वयं पढ़ सकते हैं। यह मिलावट राजा भोज के पश्चात् भी निरन्तर जारी रही और आज गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित महाभारत ग्रन्थ में एक लाख दो सौ सत्रह श्लोक हैं। इस कारण महाभारत के प्रमाण देने से पूर्व विशेष तर्क,

बुद्धि और गम्भीर स्वाध्याय का आश्रय लेना आवश्यक है। इन सब कारणों से हमें गणेश जी का इतिहास ही पूर्णतया कल्पित प्रतीत होता है। हिन्दुओं में पूजे जा रहे विभिन्न देवी-देवताओं में महादेव, विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, भगवती उमा, राम, हनुमान् एवं कृष्ण आदि ऐतिहासिक पुरुष हैं। इनमें से शिव, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र एक परमपिता परमेश्वर के भी गुणवाची नाम हैं, जो वेदों में वर्णित हैं और वेदों में से ही पढ़कर हमारे महापुरुषों ने अपने-2 नाम रखे। इस प्रकार जिन साकार देवों की पूजा होती है, वह वस्तुतः ईश्वर की पूजा नहीं, बल्कि उन महापुरुषों के विकृत चित्रों की पूजा होती है। इनमें गणेश जी की ऐतिहासिकता कहीं सिद्ध नहीं होती है।

गणेश जी का वैदिक स्वरूप

वस्तुतः गणपति ईश्वर का नाम अवश्य है, जो वेदों में उपलब्ध है। इस नाम की व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में लिखते हैं-

> ‘जो प्रकृत्यादि जड़ और सब प्रख्यात पदार्थों का स्वामी वा पालन करने हारा है, इससे उस ईश्वर का नाम **गणेश** वा **गणपति** है।’

वेद में ऐसे ही गणपति का वर्णन अनेक मन्त्रों में आता है। राजा का नाम भी गणपति होता है, क्योंकि वह ‘गण’ अर्थात् प्रजा के समुदायों का रक्षक और पालक होता है। गणपति का एक अर्थ सेनापति भी होता है, क्योंकि वह सेना के समूहों का स्वामी होता है। आचार्य और माता-पिता

को भी गणपति कह सकते हैं। निघण्टु शास्त्र में 'गणः' शब्द वाक् तत्त्व के लिए प्रयुक्त हुआ है।

इस कारण वैज्ञानिक अर्थ में गणपति का अर्थ मनस्तत्त्व, प्राणतत्त्व एवं आध्यात्मिक अर्थ में परमात्मा होता है। महर्षि तित्तिर द्वारा रचित तैत्तिरीय संहिता में विभिन्न मरुद् रश्मियों को गणपति कहा है, क्योंकि ये रश्मियाँ इस ब्रह्माण्ड में सूक्ष्म प्राण एवं छन्द रश्मियों के साथ मिलकर विद्युत् तरंगों को उत्पन्न वा नियन्त्रित करती हैं। ये मरुद् रश्मियाँ ही आकाशीय विद्युत् एवं विभिन्न तारों में बहने वाली तीव्र विद्युत् तरंगों को समृद्ध करती हैं। इधर आध्यात्मिक अर्थ में इन्द्रियों का स्वामी होने के कारण जीवात्मा को भी गणपति कह सकते है।

सारांशतः गणपति/गणेश के तीन अर्थ सिद्ध होते हैं-

1. **आध्यात्मिक**- ईश्वर एवं जीवात्मा।
2. **आधिभौतिक**- राजा, सेनापति, माता-पिता एवं आचार्य आदि।
3. **आधिदैविक** (वैज्ञानिक)- मनस्तत्त्व, प्राणतत्त्व एवं मरुद् रश्मियाँ।

गणपति की पूजा कैसे करें?

1. आध्यात्मिक गणपति की पूजा- समस्त ब्रह्माण्ड के स्वामी निराकार गणपति परमेश्वर की नित्य उपासना, ध्यान करें। जैसे वह सबका पालन व रक्षण करता है, वैसे ही हम भी न केवल मनुष्य, अपितु प्राणिमात्र के साथ मित्रवत् व्यवहार करके उनके सुख को अपना सुख एवं उनके दुःख को अपना दुःख समझें। मिथ्या आस्थाओं के नाम पर चल रहे सम्प्रदायों, भाषा, देश एवं कथित जाति, लिंग, रंग आदि के नाम पर वैर, विरोध एवं भेदभाव कदापि न करें।

दूसरी ओर अपने आत्मा को वास्तव में इन्द्रियों का स्वामी बनावें एवं स्वच्छन्दता, विषयलोलुपता आदि से दूर रहने का प्रयास करें।

2. आधिभौतिक गणपति की पूजा- देश का राजा (वर्तमान में नेता) देश की पूजा अर्थात् वास्तव में देश का पालन और रक्षण करने वाला होवे। वह जाति, मजहब आदि के नाम पर किसी के साथ अन्याय, भेदभाव न करके समान रूप से सबका संरक्षण करने वाला होवे। वह आध्यात्मिक गणपति की सच्ची पूजा करने वाला होवे। इसके साथ ही प्रजा का यह कर्त्तव्य है कि देश में उपलब्ध नेताओं में से तुलनात्मक रूप से जो भी ऐसी पूजा करने वाला हो, उसको ही अपना नेता चुने। योग्यता, चरित्र और कर्मठता की तुलना करके ही नेता का चुनाव करें। तात्कालिक लोभ तथा जाति और मजहबों के प्रलोभन से बचें और राष्ट्रहित को सर्वोपरि समझें। जब शासक गणपति के सच्चे उपासक न हों, तो राष्ट्र की सजग प्रहरी जनता संगठित होकर शान्तिपूर्ण तरीके से उन्हें सत्य न्याय के मार्ग पर चलने के लिए बाध्य करे। दुर्भाग्यवश आज अन्याय की माँग करने वाले संगठित होकर आन्दोलन करते हैं, परन्तु न्याय की माँग करने वाले असंगठित ही रहकर घर बैठे शासकों की निन्दा मात्र तक सीमित रहते हैं।

उधर राष्ट्र की रक्षिका सेना के प्रति प्रत्येक गणपति पूजक आत्मीयता व सम्मान का भाव रखते हुए अपनी ओर से राष्ट्रीय सुरक्षा कोष हेतु निरन्तर आर्थिक सहयोग करना अपना कर्त्तव्य समझे, जिससे हमारी सेना समृद्ध व सशक्त होवे और सैनिकों को पर्याप्त सुविधाएँ मिल सकें। इसी प्रकार सच्चे विद्वानों व माता-पिता के प्रति सेवा-सत्कार का भाव रखना भी सच्ची गणपति पूजा है।

3. आधिदैविक (वैज्ञानिक) गणपति की पूजा– मनस्तत्त्व, प्राण, मरुत् आदि रश्मियों का गम्भीर ज्ञान करके ब्रह्माण्ड को समझने का प्रयास किया जाए एवं सृष्टि विद्या को यथार्थ रूप में जानकर आधुनिक भौतिकी को पूर्णता और प्रामाणिकता प्रदान करके संसार में पूर्ण निरापद एवं अति आवश्यक तकनीक का ही विकास किया जाए, जिससे पर्यावरण तन्त्र सुरक्षित और स्वस्थ रहकर प्राणिमात्र को सुख देने वाला होवे।

नोट

वर्तमान में पाण्डालों में पूजा करने वाले गणेश जी के सभी भक्तों से आग्रह है कि वे अपनी पूजा पद्धति और हमारी पूजा दोनों की तुलना निष्पक्ष रूप से स्वयं करके देखें, केवल भावनाओं एवं मिथ्या परम्पराओं में नहीं, बल्कि मन और बुद्धि से शान्तचित्त होकर आपका आत्मा जैसा उचित समझे वैसा करें।

‘मैं वैदिक विज्ञान के द्वारा एक अखण्ड, सुखी व समृद्ध भारत के निर्माण की आधारशिला रखने का प्रयास कर रहा हूँ, जिसमें प्रत्येक भारतीय तन, मन, विचारों व संस्कारों से विशुद्ध भारतीय होगा। उसके पास अपना विज्ञान वेदों, ऋषियों व देवों के प्राचीन विज्ञान पर आधारित एवं अपनी भाषा हिन्दी व संस्कृत में होगा। उसे अपने पूर्वजों की प्रतिभा, चरित्र एवं संस्कारों पर गर्व होगा, उसे पाश्चात्य विद्वानों की बौद्धिक दासता से मुक्ति मिलेगी, जिससे लार्ड मैकाले का वर्तमान में साकार हो चुका स्वप्न ध्वस्त हो सकेगा। यह प्यारा राष्ट्र पुनः विश्वगुरु बनकर विश्व को शान्ति एवं आनन्द का मार्ग दिखाएगा।’

–आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

/vaidicphysics www.vaidicphysics.org